International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 7 Issue 03 Ver. I ||March. 2018 || PP.91-92

श्रीमद्भगवत गीता और रामायण के क्रियात्मक प्रचार की आवष्यकता

डा. उर्मिला मीणा घूमना
सहआचार्य संस्कृत विभाग,
महारानी श्री जया राजकीय महाविद्यालय,
भरतपुर (राज.)

परम कृपालु प्रभु की परम अनुकम्पा से मनुष्य शरीर प्राप्त हुआ है इस शरीर की महिमा ऋषि महर्षि सभी बड़े हर्ष से गाते हैं, क्योंकि इससे बहुत बड़े प्रयोजन की सिद्धि हो सकती है।

श्रीमद्भगवतगीता में कहा है कि जिस लाभ से बढ़कर कोई लाभ नहीं और जिसमें स्थित होने पर बड़ा भारी दुःख कभी भी विचलित नहीं कर सकता–

यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः।[1]
यस्मिन् स्थितो न दुःखेन गुरुणामि विचाल्यते।। (भगवतगीता, 6/22)

ऐसा अनुपम लाभ अभी इसी शरीर में और हर एक मनुष्य को हो सकता है। मूर्ख से मूर्ख एवं पापी–से–पापी भी थोडे से थोडे समय में दुर्लभ परमपद परमात्मा को प्राप्त कर सकता है। भगवगीता में श्री भगवान् ने कहा है–

तेषां सतंत युक्तानं भजतां प्रीतिपूर्वकम्।
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते (गीता, 10/10)

भगवान स्वयं जब बुद्धियोग प्रदान करेगें तब मूर्ख से भी मूर्ख क्यों न हो, उसे उनकी प्राप्ति में कौनसी अड़चन रहेगी। भगवान् ने यहाँ तक कह दिया कि 'अपि चेत्सुदुराचारः' सुष्ठुदुराचारी अर्थात् साङ्गोपाङ्ग पापी भी अनन्यभाक् होकर भजन करे तो उसको भी साधु मानना चाहिये, क्योंकि उसने निश्चय बहुत ही अच्छा कर लिया है। इससे वह क्षिप्र–बहुत ही शीघ्र धर्मात्मा बन जायेगा और शाश्वती शान्ति को प्राप्त हो जायेगा। अधिक समय की भी आवश्यकता भगवान् नहीं बताते–

अन्तकाले च मामेव स्मरन् मुक्त्वा कलेवरम्।
यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः।। (गीता, 8/5)

इस श्लोक में 'च' अव्यय 'अपि' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। इसका अर्थ होता हैकि 'अन्तकाल में भी मुझको याद करता हुआ शरीर छोड़कर जाता है, तो भी मुझको प्राप्त हो जाता है– इसमें सन्देह नहीं। तब' जो सब समय भगवान् का चिन्तन करे, उसके कल्याण में तो कहना ही क्या है? गीता आदि ग्रन्थों के विचार करने पर यह बात समझ में आती है कि प्रभु की प्राप्ति वास्तव में कठिन नहीं तथा उसके लिये अधिक समय की भी आवश्यकता नहीं आवश्यकता है। अपनी हार्दिक लगन की तथा परमात्मा की प्राप्ति के मार्ग तरीके जानने की।

मार्गो को जानने और बताने वाले हैं। सच्चे महात्मा एवं शास्त्र वेद स्मृति पुराण, इतिहास आदि ग्रन्थ इनमें महात्माओं को तो हरेक मनुष्य पहचान ही नहीं सकता, तब वह उनसे कैसे लाभ उठाये और वेदादि ग्रन्थों का सम्यक् रीति से अध्ययन करके विचारपूर्वक यथाधिकार साधन चुन लेना साधारण बात नहीं। शास्त्र का पारावार नहीं, ऐसी हालत में हमें सुगमता से सरल और सुखमय मार्ग का बोध करा देने वाले छोटे तथा सरल ग्रन्थ हो तो हम अनायास ही अपने जीवन को सफल बना सकते हैं और इसके लिये मेरी साधारण बुद्धि के अनुसा श्रीमद्भगवतगीता और श्रीतुलसीदास कृत रामचरितमानस ये दो ग्रन्थ बहुत ही उपादेय हैं। श्री गीतोपदेश के समय अर्जुन की जो दशा थी वही किकर्त्तव्य–विमूढ दशा आज भारत वर्ष की है और इधर राज्यव्यवस्था को देखते रामायण की अर्थात् रामराज्य की अधिक आवश्यकता प्रतीत होती है। जीवन में रामजी का आदर्श बर्ताव नितान्त प्रयोजनीय है। और इसके लिये रामायण और गीता का श्रद्धापूर्वक पाठ करना उसका अर्थ समझना और उसी के अनुसार जीवन बनाना परम आवश्यक है। और यह सब तभी सम्भव है जब कि हम गीता और रामायण को अच्छी तरह समझकर तदनुकूल आचरण करें उसको अपने जीवन में उतारे।

इसलिये गीता और रामायण का स्वयं पठन पाठन करना चाहिये और दूसरों से भी करवाना चाहिये। उन बालकों को जो आधुनिक समयानुसार धर्मरहित शिक्षा पाये हुए हैं। विशेष रूप से सच्ची धार्मिक शिक्षा की आवश्यकता है। हमारे शास्त्रों का तो कहना है– धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः। यह पशुवृत्ति बडे जोरो से हमारे देश में फैल रही है और

घर कर रही है। अतः इसे निकालने के लिये उनकी शरण लेनी चाहिये जो स्वार्थत्यागी और हमारे यथार्थ हितेषी है। ऐसे ही भगवान और उनके प्यारे भक्तः–

सुर नर मुनि सब कै यह रीति। स्वारथ लागि करहि सब प्रीति।
स्वारथ मीत सकल जग माही। सपनेहुँ प्रभु परमारथ नाही।
हेतु रहित जग जुग उपकारी। तुम्ह तुम्हार सेवक असुरारी

संतन मिलि निरनै कियो मथि पुरान इतिहास।
भजिबे को दोई सुधर कै करि कै हरिदास।।

इन दोनों के ही साक्षात् वचनामृतरूप थे दो पवित्र ग्रन्थरत्न हैं– श्री भगवान् के श्रीमुख की वाणी गीता और भक्तराम तुलसी की मधुर वाणी श्री रामायण। भाषाएँ अनेक हैं पर उनमें सर्वश्रेष्ठ है –देवभाषा संस्कृत और दूसरी है राष्ट्रभाषा हिन्दी गीता संस्कृत में है और रामायण हिन्दी में। हमारे अवतार भी दो ही मुख्य माने जाते हैं– एक श्रीराम और दूसरे श्रीकृष्ण। उक्त दोनों ग्रन्थ भी इन दोनों की महिमा है। उपदेश देने के तरीके भी दो ही हैं। एक मुख से कहकर और एक आचरण करके–

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत् तदेवेतरो जनः
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकतदनुवर्तते।। (3/21)

वही श्रीगीता में श्रीभगवान ने कहकर उपदेश दिया और भगवान् श्रीरामजी को श्रीरामायण में उसी को करके दिखलाया। काव्य भी दो ही तरह के होते हैं– एक दृश्य और दूसरा श्रव्य। रामायण दृश्य और गीता श्रव्य है।

श्रीमद्भगवतगीता संक्षिप्त उपदेश से और रामायण विशद उदाहरणों और लीला–कथाओं से हमें समझा रही है। इसलिये इन दोनों ग्रन्थरत्नों का अच्छी तरह से अध्ययन करके अनुसरण करना चाहिये।

संदर्भ –

1. भगवतगीता, 6/22
2. भगवतगीता, 10/10
3. भगवतगीता, 8/5
4. भगवतगीता, 3/21